



# ओशो का नया मनुष्य:

# हंशता हुआ बुद्ध

**‘हाई एनर्जी डान्सिंग और स्वयं के साथ उत्सव, जहां आप स्वयं को बस जाने देते हैं और जितनी अधिक पूर्णता से आप नृत्य करेंगे, उतना अधिक आप विश्राम में होंगे।’**—‘अपर क्रस्ट’ पत्रिका के दिसंबर अंक में 15 पृष्ठों का रंगीन चित्रों सहित एक अति सुंदर लेख प्रकाशित किया। फरज़ाना कॉन्ट्रेक्टर ने पूना कम्प्यून के अपने अनुभवों को इस 15 पृष्ठ के लेख में बखूबी उतारा है। प्रत्येक

कूरियर ने प्रकाशित किया। परमात्मा लाखों उपहारों को तुम पर बरसा रहा है। तुम देखो उन उपहारों को और तुम चकित हो जाओगे कि तुम कैसे इन्हें खो रहे थे। अहोभाव के लिए तो आनंद की एक श्वास ही पर्याप्त है।’ प्रस्तुत लेख के ‘ओपन यॉर आइज़’ नामक शीर्षक से प्रकाशित किया गया।

‘समान का मेरा मतलब पुरुषों जैसी नहीं, पुरुषों के समान होने का मतलब, पुरुष ने जितना विकास किया, उतना ही विकास’—स्त्री जाति को समर्पित ओशो की इस प्रवचन शृंखला को 3 दिसंबर के पंजाब केसरी ने प्रकाशित किया। ‘तुम्हारा हृदय शुद्ध हो जाए, तो बुद्धि शुद्ध हो जाती है। तुम्हारी बुद्धि शुद्ध हो जाए, तो हृदय शुद्ध हो जाता है। तुम्हारे भीतर कहीं से भी शुद्धि की किरण उतर जाए।’—4 दिसंबर के दिव्य हिमाचल ने यह प्रवचनांश ‘कैसे करें हृदय और बुद्धि की शुद्धि’ शीर्षक से छपा।

‘भारत से बाहर जो धर्म जन्में, एक जिन्दगी में विश्वास रखते हैं और वह 70 वर्ष तक की है। जाहिर है सबको जल्दी है। इतनी छोटी सी जिंदगी और इतना कुछ है करने को...इसीलिए पश्चिम का मस्तिष्क बहुत तीव्र है, सब कुछ तीव्र करने की चाह..। मगर भारत में जन्मे धर्मों की धारणा है जीवन के पश्चात् जीवन। उसमें कोई तीव्रता नहीं।’ ‘फ्रॉम ओशो बियॉड सायकॉलोजी’ से प्रकाशित इस प्रवचनांश को 6 दिसंबर के दि पायनियर, नई दिल्ली ने प्रकाशित किया।

6 दिसंबर की इकानॉमिक टाइम्स ने अपने स्तंभ साइंटिंग में मौन पर ओशो का प्रवचनांश प्रकाशित किया। इसका एक उद्धरण है : ‘आपकी एक ही जरूरत है कि आप मौन हो जाएं और अस्तित्व को सुनें।’

9 दिसंबर के दैनिक जागरण, पानीपत ने ओशो के एक बेहद रोचक प्रवचन को छपा किया। शीर्षक दिया—‘मंदिर एक विश्राम है।’ ओशो कहते हैं—‘मंदिर एक बिल्कुल अलग जगह है, जहां लेने-देने की दुनिया नहीं है, इसीलिए जिन्होंने मंदिर को लेने-देने की दुनिया बनाया, उन्होंने ही मंदिर को गिराया और बाजार बनाया। मंदिर तो एक विश्राम है।’ कुछ लोगों ने धर्म के नाम पर यकीनन मंदिर को लेने-देने की दुनिया बनाया है।

ओशो ने मानवता को एक नई जीवन शैली दी है। एक ऐसी शैली जो ध्यान और उत्सव से परिपूर्ण है। स्वामी कीर्ति की प्रस्तुति में 11 दिसंबर के हिन्दुस्तान टाइम्स में ‘लाफ्टर इज़ ए फॉर्म ऑफ मेडिटेशन’ शीर्षक से एक लेख प्रकाशित हुआ। इसमें लिखा है—हंसी में अपूर्व सौंदर्य है, वह बहुआयामी होती है। वह आपको निर्भार कर विश्राम में ले जाती है और आपके संसार को एक सुंदर अनुभव बनाती है।’

ओशो के जन्म-दिवस, 11 दिसंबर को टाइम्स ऑफ इंडिया के सभी संस्करणों में ‘विद्रोही चेतना : सत्य की खोज’ (रिबेलियस स्पिरिट, सर्च फार ट्रुथ) ओशो प्रवचनांश प्रकाशित हुआ।

ओशो जयंती पर विनोद भारद्वाज की प्रस्तुति में जयपुर के दैनिक भास्कर ने ‘आज सदा कर्म है...’ लेख प्रकाशित किया। लेख के आरंभ में लिखा है—प्रसिद्ध लेखिका अमृता प्रीतम ने ‘ओशो’ को एक ग्रंथ माना है, एक ऐसा ग्रंथ जिसका कोई भी पृष्ठ खोला जाए, उसकी हर पंक्ति में होने की पहचान मिलती है। श्री भारद्वाज कहते हैं कि ‘चेतना के इस ग्रंथ ‘ओशो’ को अतीत की किसी धार्मिक परंपरा या शृंखला की



स्थान का अत्यंत रोचक एवं सजीव चित्रण इस लेख में प्रस्तुत है।

**‘हममें से कोई भी भिखारी नहीं है। परमात्मा भिखारी पैदा करता ही नहीं।... परमात्मा जिसे भी बनाएगा उसे सम्राट ही बनाएगा।’**

यही कह रहे हैं ओशो अपने इस प्रवचन में, जिसे 2 दिसंबर को दि आफ्टरनून डिस्पैच एंड

कड़ी नहीं माना जा सकता।' इसे दैनिक भास्कर, पानीपत ने 11 दिसंबर को प्रकाशित किया।

'प्रेम शक्ति है, और जो प्रेम से जीतता है, वही वस्तुतः ही जीतता है... क्योंकि प्रेम परमात्मा की उपस्थिति का प्रकाश है।' मिट्टी के दीये पुस्तक से प्रकाशित इस कहानी में ओशो ने प्रेम को परमात्मा का प्रकाश बताया है और कहा कि जो अखंड और अटूट प्रेम को पा लेता है, वह सब पा लेता है। इस कहानी को 12 दिसंबर के हिन्दुस्तान, नई दिल्ली ने प्रकाशित किया।

'ओशो का नया मनुष्य ज़ोरबा दि बुद्धा है। हंसता हुआ बुद्ध है। ध्यानस्थ आइंस्टीन है। रास रचाता कृष्ण है। कपड़े बुनता कबीर है। नाचती मीरा है।' सुधांशु शेखर ने अपने इस लेख में बताया कि सिल्क सिटी, भागलपुर में ओशो गैलेरी में ओशो की पुस्तकें तथा कैसेट उपलब्ध हैं। ओशो सन्मार्ग ध्यान केंद्र यहां सक्रिय है। जहां स्वामी अनंत सरस्वती के मार्गदर्शन में प्रत्येक रविवार को ध्यान का कार्यक्रम होता है तथा समय-समय पर ओशो ध्यान शिविरों का भी आयोजन होता है।

ओशो समाधान ध्यान केंद्र, नागपुर द्वारा ओशो जन्मोत्सव के अवसर पर 12 दिसंबर को एक दिवसीय ध्यान शिविर आयोजित किया। इधर इंदौर के ओशो समवेत ध्यान केंद्र ने भी 11 दिसंबर को एक दिवसीय ध्यान शिविर आयोजित किया। 10 दिसंबर के नई दुनिया, इंदौर ने ध्यान शिविर की पूर्व सूचना को प्रकाशित किया। वहीं साथ ही इंदिरा हॉलिडे होम में एक दिवसीय ध्यान शिविर का आरंभ सक्रिय ध्यान द्वारा किया गया। साधकों को सूफी ध्यान भी करवाया गया जिसमें

केंद्रित किया जाता है। ओशो नमन ध्यान केंद्र द्वारा आयोजित इस शिविर का संचालन मा योग शुक्ला द्वारा किया गया और चंडीगढ़ के टाइम्स ऑफ इंडिया तथा दैनिक भास्कर ने 12 दिसंबर को समाचार प्रकाशित किया।

ओशो धारा ट्रस्ट द्वारा पंचकुला में स्वामी आत्मो निनांद के संचालन में ओशो जन्मोत्सव मनाया गया। शिमला, हरियाणा, पंजाब आदि राज्यों से आये साधकों ने शिविर में भाग लिया। 11 दिसंबर के दिन रोहिणी, सेक्टर 7 नई दिल्ली में ओशो ओंकार मंदिर की स्थापना भी हुई। इस समाचार को पंजाब केसरी तथा अमर उजाला ने प्रकाशित किया। खबर के अनुसार—सैकड़ों ओशो प्रेमियों ने स्वयं में लीन होकर ओशो जन्मोत्सव संगीतमय व उत्सवपूर्ण माहौल में मनाया।

17-19 दिसंबर को ओशो प्रेम बिंदु ध्यान केंद्र, अमृतसर में मा योग नीलम के संचालन में तीन दिवसीय ध्यान आयोजित हुआ। शिविर संबंधी समाचारों को दैनिक जागरण तथा दिव्य हिमाचल ने प्रमुखता से प्रकाशित किया। समाचार पत्रों के अनुसार—कुछ पलों के लिए उन्हें ऐसा लगा जैसे कोई शक्ति उन्हें अपनी तरफ खींच रही है।...कोई किसी ऐसी दुनिया में ले गया हो, जहां आनंद ही आनंद हो। जहां प्रेम की वर्षा हो रही हो।' मा योग नीलम ने कहा कि खुद पर भरोसा कर अकेले ही प्रयास करते हुए परमात्मा



को हासिल करने का मार्ग अपनाता है। पटियाला के ओशो ध्यान सरगम केंद्र द्वारा आयोजित तीन दिवसीय ओशो पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन हुआ। हिन्दी तथा अंग्रेजी साहित्य के साथ-साथ पंजाबी साहित्य भी इस प्रदर्शनी में उपलब्ध था। साथ ही साथ एक दिवसीय ध्यान शिविर का भी आयोजन किया गया। दैनिक भास्कर, अमर उजाला, दैनिक जागरण, पंजाब केसरी, पंजाब न्यूज तथा अनेकों स्थानीय भाषा के समाचार पत्रों ने इस समाचार को प्रमुखता से छापा।

ओशो जन्मोत्सव पर विशेष रूप से भारत आए जर्मनी के स्वामी प्रेम जोशुआ से हुए संवाद को इंडिया टुडे ने 27 दिसंबर को प्रकाशित किया। स्वामी प्रेम जोशुआ ने कहा—मेरा तो साफ मानना है कि भारतीय राग संगीत युगों पहले किन्नर-गंधर्वों से सीधे प्राप्त शब्दहीन और कालातीत संदेश है।'

# Laughter is a form of meditation

Swami Chaitanya Keerti  
OSHO'S GREATEST gift to humanity is to teach it a lifestyle of meditation and celebration. He does not want man to renounce this life and escape to the Himalayas, but remain in the marketplace and learn the art of meditation, to transform this life into one of playful creativity.  
Not to treat this life as a burden but as a unique gift from existence. This gift transcends religious seriousness and monotony and enables us to expand beyond the limits of our intellect. This is an art of living that modern man must

inculcate.  
Osho introduces laughter as meditation. Our noisy mind stops for a few precious moments in our spontaneous laughter, giving us the taste of meditation.  
In the twelfth discourse of The Transmission of the Lamp, Osho says: "One of my contributions to religion is a sense of humour which no other religion contains. And one of my basic statements about it is that laughter is the highest spiritual quality. Most religions have



INNER VOICE

made it difficult to laugh. A sense of humour has not been recognised by any religion as a religious quality. I declare it to be the highest religious quality. And if we can decide that every year, for one hour, at a certain date, at a certain time, the whole world will laugh, I think it will help to dispel darkness, violence, and stupidities — because laughter is the only human characteristic which no animal possesses."  
"All animals are inca-

pable of laughter a whenever religions make somebody a saint, he lo laughter. He falls down evolutionary ladder a does not rise higher." O says.  
"Laughter has a bea and is multi-dimension it can help you relax, can suddenly make y feel light, it can m your world a beauti experience, and not a b den. It can change ev thing in your life. Just touch of laughter c make life something worth living, something to be grateful for."

innervoice@hindustantimes.com



श्री ओशो

